# पाठशाला

(जीवन जीने की कला)

परमम्

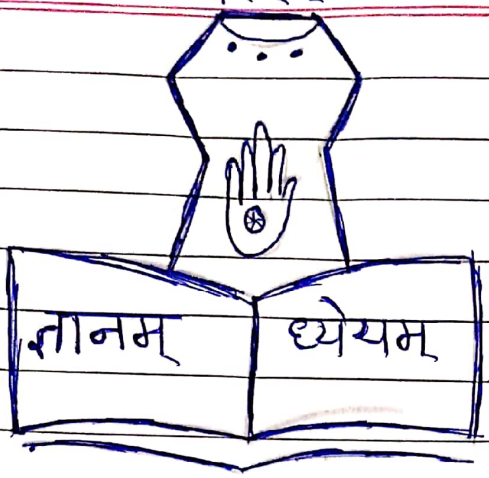


जय जिनेंद्र

आज के इस वैज्ञानिक युग मे लोग भौतीक कार्य मे व्यस्त होते जा रहा है। उनको धर्म कार्य के लिए समय निकालना मुश्कील होता जा रहा है। कुछ समय पहीले पाठशाला को संस्कारशाला भी कहा जाता था। और वह बच्चो तक ही सिमित थी। पर अभी संस्कारशाला की आवश्यकता बच्चो को ही नही तो बच्चो से वृध्द तक इसकी आवश्यकता है। पाठशाला ज्ञान का केंद्र होती है। जीवन निर्माण की प्रयोगशाला होती है और समाज व राष्ट्र की धुरी होती है। हमारे इस संस्कार शालाओं में धर्म के मूल सिद्धांत, नैतिक जीवन व शिष्टाचार की शिक्षा मिलती है जिससे बच्चे का जीवन पथ सुगम सहज बनता है।

अपने धर्म के मुलभुत सिध्दांतो के जानकारि के विना कई परिवार धर्म से विमुख हो जा रहे है। धर्म ज्ञान की ज्योती को विकसाने मे पाठशाला का विशेष योगदान होता है। धर्म के शिक्षा के बीना संस्कारोका शुध्दीकरण संभव नही। पाठशाला के माध्यम से धर्म हमे जीवन जिने की कला सिखाता है। वैसे ही क्या खाना, कैसे खाना, क्या पिना, कैसे पिना, कैसे बैठना, कैसे उठना, कैसे रहना यहा तक की कैसे सोचना भी जैन धर्म सिखाता है। पाठशाला धर्म की प्रभावणा के लिए सर्वपुर्ण साधन है।

Scanned by CamScanner

मानव के जीवन मे प्रथम गुरू माँ होती है। और दुसरे गुरू विद्यालय और पाठशाला के अध्यापक होते है। अपना जीवन का स्तंभ संस्कारो पे निर्भय होता है। और वह गुरु के साथ ही प्रबल होता है इसीलिए कहते है –

गुरू बिना ज्ञान नही,
ज्ञान बिना आत्मा नही!
आत्मा बिना मोक्षमार्ग नही।

विद्यार्थी ओं को बचपन से ही अनुकरण करणे की विशेषता होती है। अधीक तर वह अपने गुरु का ही अनुकरण करके सिखते है। इसलिए गुरू सुस्वभावी, धार्मिक, चारित्र संपुर्ण शुद्ध होना चाहीए। गुरु की वाणी, वर्तन, ~~और बनावेक~~ मनमोहक और विनय पुर्ण होगी चाहिए गुरु को कीसी भी बात की आसक्ति नही होनी चाहिए।

पुरातन काल मे पाठशाला ऋषी या मुनी चलाते थे जहापर वे वे एक शांत स्थान पर बैठके ज्ञान की गंगा बहाते थे। पर अब इस आधुनिक युग मे बच्चो के पास वक्त ही नहीं है। उनका स्कुल, ट्युशन इसमें अधीकतर समय बीत जाता है और बचा समय टीवी, मोबाईल, लॅपटॉप सब आधुनिक चीजों में बीताते है। यह सब हालत को सामने रखते हुए मुझे ऐसा लगता है की पाठशाला Online होनी चाहिए। और शहरो मे जीन मंदिर रोज जाना भी नामुनकीन है इसलिए अगर पाठशाला Video Conferencing के माध्यम से ले सके तो सबको लाभ मिल सकेगा, अगर इस प्रकार पाठशाला हो जाए तो बच्चो की रुची द्विगुणीत हो जाए

आजकल बच्चो को ज्यादातर Practical जानने रुची है सो पाठशाला का स्वरुप Activity base होना चाहिए। उदारनार्थ: पानी कैसे छाने, जीव व अजीव के भेद, शास्त्र कैसे पढना, पुजा की विधी इत्यादी। और यह पाठशाला सिर्फ बच्चो के लिए ही नही पर सभी

Scanned by CamScanner

के लिए होनी चाहिए। उसको age के अनुसार divide करना चाहिए जीससे हर ग्रुप के लोक पाठशाला को समझ सके। पाठशाला मे परिक्षा भी होनी चाहिए। परिक्षा रहेगी तो सब खुद से स्वध्याय करेंगे और जब खुद से पढेंगे तो प्रश्न भी आयेंगे और concept clear होते जाएगे। बीच बीच मे प्रतियोगिता होनी चाहिए जीससे interest आएगा। इस तरह से पाठशाला आयोजित कर धर्म लाभ ले सकेंगे।

# पाठशाला चलो हम

विशाखा टोपरे
हैदराबाद

Scanned by CamScanner